गाजरघास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह के पांचवें दिन

विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के खरपतवार प्रबंधन शोध परियोजना द्वारा आज गाजरघास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह के पांचवें दिन आदर्श पुष्प विज्ञान केन्द्र में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता संयुक्त निदेशक डा. वी.के. राव ने की। परियोजनाधिकारी डा. एस.पी. सिंह ने गाजरघास से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने गाजरघास के प्रतियोगी पौधे, जैसेः– चकोड़ा, लटजीरा एवं गेंदे के बारे में जानकारी दी। पूर्व परियोजनाधिकारी एवं प्राध्यापक डा. तेज प्रताप ने मनुष्यों में गाजरघास से होने वाले दुष्परिणामों जैसे डरमेटाइटिस, एक्जीमा, अस्थमा एवं पशुओं में जैसे हाई फीवर के कारण दूध का कम होना एवं दूध से दुर्गन्ध आने के बारे में बताया। उन्होनें शाकनाशियों जैसे 2,4–डी एवं मैट्रीब्यूजिन के प्रयोग से गाजरघास की रोकथाम पर चर्चा की। संयुक्त निदेशक डा. वी.के. राव ने अवगत कराया कि आदर्श पुष्प विज्ञान केन्द्र पर अब गाजरघास का कोई पौधा नहीं है केन्द्र को गाजरघास से मुक्त किया जा चुका है, उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से आग्रह किया कि इस विषाक्त पौधे के बारे में अपने परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों एवं आस–पास के लोगों को भी बताए जिससे वह भी गाजरघास के प्रति जागरूक हो सके। कार्यक्रम के अंत में परियोजनाधिकारी ने उपस्थित लोगों की सहभागिता एवं इसके अनुसरण करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।